ऑग्रेनिक खेती की ओर कदम बढ़ायें
जल, जमीन और देश बचायें

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

EMPLOYEE WELCOME JACKET
KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

AN ISO NO. 9001: 2015 Certified Company

Contact No. 6263895371, 9131654462

Website : www.kashtkaaragrobiocare.com Email : kashtkaaragrobiocare@gmail.com

Add : 32 Shivani Homes, Bypass Road, Karond Bhopal - 462038 (M.P.)

आपकी सेवा और आपकी
उन्नति ही हमारा धर्म है...

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

EMPLOYEE WELCOME JACKET

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

AN ISO NO. 9001: 2015 Certified Company

Contact No. 6263895371, 9131654462

Website : www.kashtkaaragrobiocare.com Email : kashtkaaragrobiocare@gmail.com

add : 32 Shivani Homes, Bypass Road, Karond Bhopal - 462038 (M.P.)

आदरणीय किसान भाइयों

सादर बंधन,

काश्तकार एग्रो बायोकेयर कम्पनी आपका स्वागत करती है। हम सभी कृषि प्रधान देश में रहेंगे है। जिसमें सब कुछ खेती पर निर्भर है। लेकिन आज हमारा किसान बहुत भयानक स्थिति से गुजर रहा है। इस स्थिति को समझ कर एवं देखकर काश्तकार एग्रो बायो केयर कम्पनी हमारे देश के किसानों की यथा स्थिति को सुधारने के लिए आगे आई है। काश्तकार एग्रो बायो केयर बहुत ही अनोखे जैविक उत्पाद की श्रृंखला लेकर आई है। जिसमें किसान भाईयों को बहुत ही कम खर्च में उत्पादन ले सकते है एवं अपनी जमीन एवं फसल की बीमारियों को कम कर अधिंक पैदावार ले सकते है। हमारी कम्पनी द्वारा जैविक खेती के बारे में घर बैठे सम्पूर्ण जानकारी शिक्षित टीम एवं वैज्ञानिकों के द्वारा दी जाती है। जिससे किसान अपनी खेती को मुनाफे का धंधा बना सकते है।

आज किसान के सामने सबसे बड़ी चुनौती जमीन की उर्वरक शक्ति का खत्म होना है। जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ाने के लिए काश्तकार एग्रो बायोकेयर जैविक खाद की सम्पूर्ण रेन्ज लेकर आई है।

काश्तकार एग्रो से किसान हित में काम करती आई है एवं करती रहेगी और आगे भी नई-नई तकनीक का उपयोग करके उच्च श्रेणी के उत्पाद लाती रहेगी। लाखों किसानों की पसंदीदा कम्पनी किसान एग्रो बायो केयर हर किसान की जुबान पर एक ही नाम काश्तकार एग्रो बायोकेयर।

धन्यवाद!

कास्तकार एग्रो का बस एक ही नारा
समृद्ध हो किसान हमारा

आपकी अपनी

काश्तकार एग्रो बायोकेयर प्राईवेट लिमिटेड

आज की स्थिति

- बहुत सी फसलों में हाईब्रीड बीज विकसित कीए जा चुके हैं। कपास में नई खोज के रूप में बी.टी. प्रजाति का विकास एक क्रांतिकारी खोज है।
- टपक सिंचाई (ड्रिप) एवं फौव्वारा (स्प्रिंकलर) सिंचाई पद्धति का बहुत से राज्यों में परिचय हो चुका है जो कि पानी की काफी बचत करता है
- बहुत से किसान सिंचाई के साथ घुलनशील उर्वरक को व्यवहार में लाना शुरू का दिये हैं।
- साधारणतया किसान बहुत अधिक मात्रा में अकार्बनिक खादों को व्यवहार में लाते हैं। ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि किसान बहुत अधिक मात्रा में कीटनाशक और
- उनके मिश्रण को व्यवहार में ला रहें हैं जो कि अनुचित है।

रासायनिक खादों के दुष्परिणाम

- सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होती है → कम पैदावार, रोगयुक्त फसल, कम गुणवत्तायुक्त उत्पादन → सूक्ष्म पोषक तत्वों का उपयोग करें।
- कार्बन नाईट्रोजन रेशों असंतुलित होता है → ज्यादा कीटाणुओं का आक्रमण तथा उत्पादन मिलता है। → कार्बनिक खाद का उपयोग करें
- किसान के दोस्त माने जाने वाले कीड़े व केंचुओं का नाश होता है। → जमीन की उपजाउपन खो जाती है और पानी धारण करने की क्षमता कम हो जाती है। → कार्बनिक खाद का उपयोग करें
- जमीन का पी.एच. बढ़ाता है → पोषक तत्वों की कमी, वृद्धि में कमी, कम उत्पादन मिलता है। → कार्बनिक खाद का उपयोग करें

सबसे चिंताजनक कई सच्चाई यह है कि अधिक मात्रा में हाईब्रीड बीज, अकार्बनिक खाद एवं कीटनाशकों को उपयोग में लाने के बावजूद भी पिदले 8-10 सालों में किसान अपनी फसल की उपज को बढ़ाने में असमर्थ है।

जैव खाद के फायदे

- जैव खाद का अधिक मात्रा में इस्तेमाल होने पर भी किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता। → भूमि की उर्वरकता की रक्षा करता है → भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाता है। → खर्च कम होता है।
- सहज रूप से प्राप्त होता है → जमीन में पानी को सुरक्षित रखने में सहायक सिद्ध होता है। → फसल में सूखे से जूझने की शक्ति बढ़ाती है। → पौधा स्वस्थ और दृढ़ रहता है। → वातावरण में उपलब्ध नाईट्रोजन भूमि को मिलती है।
- मुख्य व द्वितीय पोषक तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्व पौधों को उपलब्ध करता है। → जमीन में सहज सिद्ध पोषक तत्वों के इस्तेमाल को बढ़ाता है। → जमीन में अनावश्यक कीड़े-मकोड़ों की संख्या कम करता है। → गुणवत्तायुक्त अधिक फसल प्राप्त होती है

फसल की पैदावार में वृद्धि होती है

जैव खाद क्या है

जमीन कि लिए आवश्यक पोषक तत्वों को वातावरण या जमीन से प्राप्त कर पौधों को देने वाले जीवों का समुदाय है रासायनिक खाद की तरह जैव खाद में किसी तरह के पोषक तत्व नहीं है।

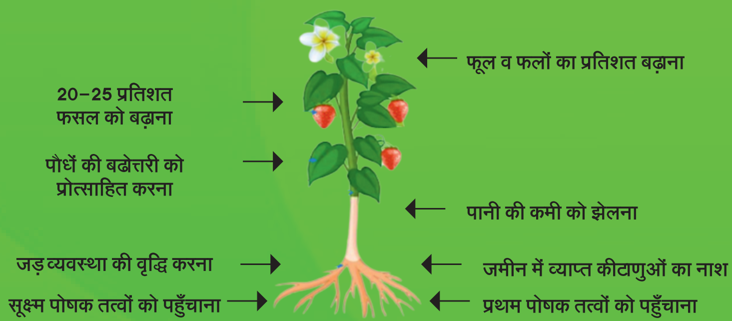

एन्टीबॉयोटिक्स, एन्जाइम्स की उत्पत्ति कर सुरक्षा व्यवस्था को सुस्थिर करना

विभिन्न फसलों के लिए पोषक तत्व की आवश्यकताऐं

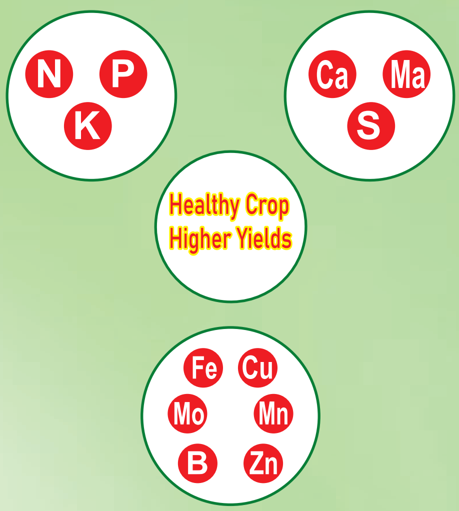

सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के लक्षण

उपरोक्त चार्ट निर्देशात्मक है अलग-अलग पौधों पर इसका प्रभाव अलग-अलग होता है

स्टार प्लस

अमिनो एसिड बेस्ड

कास्तकार का है वादा
लागत कम, मुनाफा ज्यादा

प्रिय किसान भाईयों, आप ज्यादा पैदावार और अधिक आमदनी के लिए दिन-रात प्रयासरत रहते हैं। काश्तकार एग्रो बॉयो केयर में हम हमेशा आपकी जरूरतों को समझने और पूरा करने में कार्यरत रहते हैं। काश्तकार एग्रो बायो केयर जो फसल सुरक्षा तकनीक क्षेत्र में एक अग्रणी कम्पनी है, आपकी मूल्यवान फसल की सुरक्षा करती आई है ताकि आपको पैदावार के साथ-साथ अपनी आमदनी बढ़ाने में भी कामयाबी मिले।

आपकी फसलों के संतुलित पोषक की आवश्यकता को समझते हुए काश्तकार एग्रो बायो केयर पेश करता है स्टार प्लस पौधों का पोषक है। जिससे आप एक स्वस्थ और जानदार फसल प्राप्त कर सकते हैं।

स्टार प्लस एक जैविक रूप से प्राप्त किया गया पौधों को पोषकता देने वाला उत्पाद है, जिसके महत्वपूर्ण संघटक आपकी फसलों स्वस्थ और जानदार बनाते हैं।

स्टार प्लस के लाभ :-

1. जड़ो से पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाता है, ताकि पौधों का सम्पूर्ण विकास हो।
2. फसलों के विकास के महत्वपूर्ण अवस्थाओं में सहयोग करता है और संतुलित पोषक का स्तर कायम रखता है।
3. फॉटोसिंथेसिस (प्रकाश संश्लेषण) और एन्टी-ऑक्सिडेन्ट की प्रकिया तेज कर फ्री रेडिकल्स के बुरे प्रभावों को कम करता है, ताकि पौधा हरा-भरा रहे ।
4. वातावरण से होने वाले तनाव जैसे कि भीषण गर्मी, पाला और सूखे से होने वाले दुष्प्रभाव से बचाता है ।
5. पौधों के मेटाबॉलिज्म को उत्प्रेरित करके फसल की गुणवत्ता बढ़ाता है।

मात्रा : 40-50 मि. ली. प्रति टंकी (15 लीटर पानी में)

सावधानियाँ :

1. बोतल को छाया में रखें, धूप में न रखें ।
2. इस्तेमाल से पहले बोतल को हिलाऐं ।
3. बच्चों की पहुँच से दूर रखें ।
4. केवल कृषि प्रयोग हेतू ।
5. अधिक लाभ के लिए सुबह या सायं को फसल पर छिड़काव करें ।

कोहिनूर पावडर

(बायो आर्गेनिक खाद)

Best Soil Conditioner

भारत वर्ष में हरित क्रांति के पश्चात काफी मात्रा में रसायनिक खादों का उपयोग होने लगा और उपज में वृद्धि भी हुई परन्तु लाभ के साथ ही साथ रसायनिक खाद के उपयोग से जमीन पौधों के लिए अन्य आवश्यक तत्वों की कमी हो गई । जिसमें जमीन की उत्पादकता घटने लगी जिसके कारण समय-समय पर खेती की पद्धति बदलती गई अब घर के बीजों की जगह हाईब्रीड बीजों का उपयोग होने लगा उसी तरह अब खाद भी बदलने की जरूरत है। जिससे जमीन में तत्वों की कमी न होने पाये एवं अन्य खादों का भी सही उपयोग हो इसलिए जैविक खादों का उपयोग किया जाना अनिवार्य होगा ।

कोहिनूर पावडर : जिप्सम आधारित खाद है, यह क्षारिय जमीन को उदाशीन बनाता है। जिससे जमीन की भौतिक अवस्था के सुधार में मदद होती है। वह जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ाता है। स्वस्थ फसलों के लिए मिट्टी के विभिन्न घटकों के बीच संतुलन बनाये रखता है। खेतों में जो अनुपयोगी खाद पड़ा है उसे उपयोग में लाता है, जमीन में कार्बनिक मैटर को बढ़ाने का कार्य करता है।

कोहिनूर पावडर ही क्यों ?

फसलों का अधिक उत्पादन लेने के लिए जमीन का उपजाऊ होना बहुत आवश्यक होता है एवं लम्बे समय तक कम खर्च में उत्पादन के लिए कोहिनूर पाउडर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।

कोहिनूर पाउडर को जमीन की वर्तमान हालात ध्यान में रख कर बनाया गया है । इसमें मिट्टी को क्षार को कम करने की क्षमता होती है अमिनों, ह्युमिक एसीड एवं फंगी पाउडर का उपयोग किया जाता है। जिससे पानी गृहण करने की शक्ति बढ़ने का काम करता है

कोहिनूर पावडर की विशेषताऐं -

1. जमीन के क्षार खत्म करता है और अनुपयोगी, रासायनिक खाद को दोबारा फसल के उपयोग लायक बनाता है। जमीन को भुर-भुरा एवं हल्की बनाता है । 2. जमीन में लम्बे समय तक नमी बनायें रखता है।
3. इससे जमीन के लाभदायक जीवाणु बढ़ते हैं । 4. यह कमजोर एवं खराब खेतों को उपजाऊ बनाता है।
5. इससे रासायनिक खादों में 20-30 प्रतिशत की कमी आ जाती है जिसके कारण किसानों को दोहरा लाभ होता है फसल एवं जमीन दोनों में सुधार होगा एवं लागत भी कम आयेगी पौधा स्वस्थ एवं निरोगी रहता है ।
6. किसान सुपर फास्फेट की मात्रा कम करके कोहिनूर पाउडर खाद का उपयोग करे एवं मन चाही फसल पायें।
7. कोहिनूर पाउडर जमीन में बेकार पेड़ खाद को भी इस्तेमाल लायक बनाता है।
8. कोहिनूर पाउडर को खेत में आसानी से डाला जा सकता है ।

कोहिनूर पावडर का उपयोग कब और कैसे कितनी मात्रा में करें -

कल्टीवेट से पेहले डालकर कल्टीवेट करें। पानी देने से पहले भी इसका बुरकाव किया जाता है।
कोहिनूर पाउडर का उपयोग बड़े ही आसानी से कर सकते हैं।
मजदूर को भी डालने में परेशानी नहीं होती है। कंद एवं पौध वाली फसलों में
2 बेग प्रति बीघा डालना चाहिए एवं गेहूँ, चना, सोयाबीन में 1 -1.5 बेग प्रति बीघा डालना चाहिए केला पपीता, संतरा, आदि में
1-2 किलो प्रति पौधा डालना चाहिए ।

कृषि अमृत

दानेदार खाद

फास्फेट रिच ऑर्गेनिक मैन्यूर दानेदार खाद

Better Yield for Any Crop

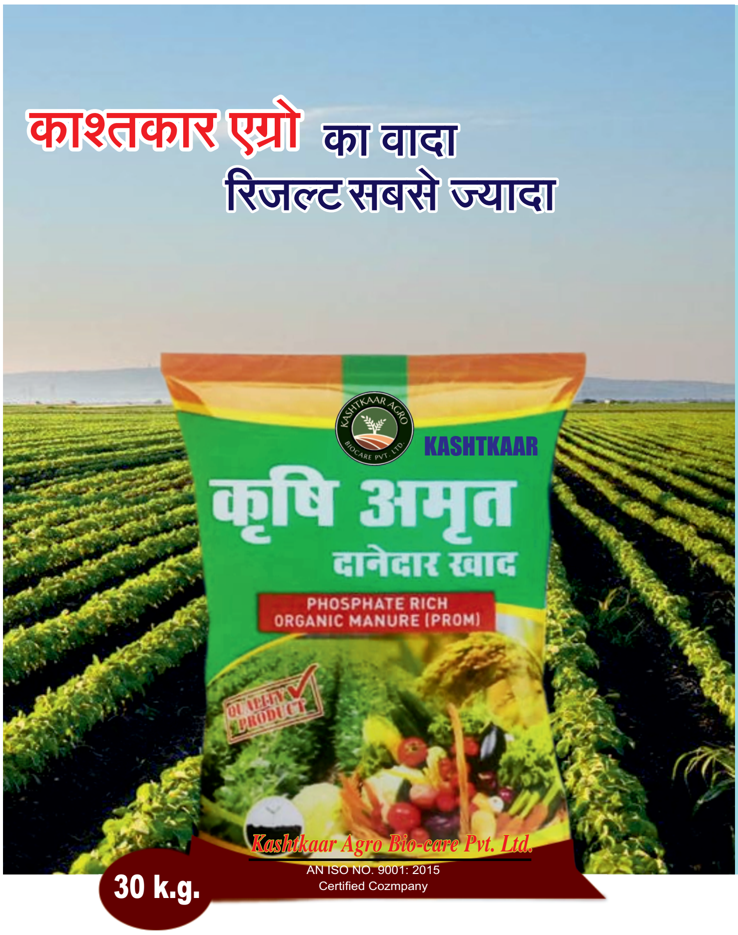

किसान भाईयों के द्वारा खेतों में विभिन्न प्रकार की फसल लेना एक विज्ञान है। कृषि अमृत डीएपी खाद का भरोसेमंद एवं सस्ता विकल्प है। फसल के सम्पूर्ण विकास के लिए तीन मुख्य तत्वों के अलावा कई घटक तत्वों (माइक्रोन्युट्रिएंटस) की आवश्यकता होती है लेकिन फसलों का उत्पादन बढ़ाने में फास्फेट तत्व का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह देखने में आया है कि अधिकतर किसान भाई मुख्य तत्व (एनपीके) तत्वों का ही उपयोग अधिक फसल पाने के लिये उपयोग करते हैं। किसान भाई यह नहीं जानते कि खाली रासायनिक खादों के उपयोग से उनकी जमीन की उत्पादन क्षमता कम हो रही है। भूमि में घटक तत्वों की कमी दूर करने एवं रासायनिकखादों का सही उपयोग हो और भरपूर उत्पादन मिले इसलिए भारत में दूसरी हरित क्रांति की आश्यकता देखते हुए काश्तकार एग्रो वायो कैयर लेकर आया है। यह उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ जमीन की शक्ति भी बढ़ाता है।

कृषि अमृत ही क्यों ?

रासायनिक खादों के केवल तत्वों यानी (एनपीके) जमीन एवं पौधों को प्राप्त होती है। जिससे उपज तो बढ़ी है किंतु दुसरे घटक तत्वों की कमी हो गई है। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि आवश्यक मात्रा में रासायनिक खाद डालने के बाद भी फसल उस मात्रा में नहीं मिल रही । इसका मुख्य कारण घटक तत्वों की कमी होना है, जिससे जमीन की उर्वरा शक्ति घट गई है। कृषि अमृत खाद एक ऐसा दानेदार खाद है, जिससे जमीन की उर्वरक शक्ति बनी रहती है। जमीन भुर-भुरी एवं हल्की होती है जिससे फसलों मे बीमारी लगने के आसार कम हो जाते हैं और कृषि अमृत खाद कम होती जर्मीनेशन को बढ़ाने का काम करता है। कृषि अमृत खाद में सभी खुबियें हैं। सभी की बातों को ध्यान में रख कर कृषि अमृत खाद में सूक्ष्म तत्व (माइक्रोन्युट्रिएंटस) को मूल पदार्थो में मिलाया जाता है। जिससे यह जमीन की कैल्शियम मेग्नीशियम सल्फर का भी उपयोग किया जाता है, जिससे यह जमीन की भौतिक गुणवत्ता एवं पानी ग्रहण करने की शक्ति बढ़ाने में मदद करता है

कृषि अमृत खाद की विशेषताऐं :–

जमीन को भुर-भुरा एवं हल्की बनाता है कमजोर एवं खराब (अनउपजाऊ) जमीन को उपजाऊ बनाता है।
जमीन में लम्बे समय तक नमी बनाये रखता है।
जमीन में अनुपयोगी पौषक तत्वों को दौबारा फसलों के उपयोग लायक बनाता है।
इससे पौधे को सूक्ष्म तत्व (कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर, कॉपर, लोहा,जस्ता इत्यादि) प्राप्त होते है, जो फसल की पैदावार बढ़ाते हैं एवं पौधे स्वस्थ व निरोगी रहते हैं।
रासायनिक खादों का इस्तेमाल 20-30: कम कर सकते है।
फसलों की हर तरह की उपज (अनाज, कंद, फल, बीज, रेशा, रस द्रमाणो मिठास एवं कंद फूलाने का काम करता है।) बढ़ाने में मदद करता है।

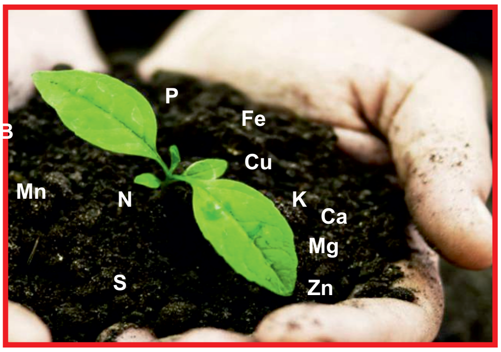

कृषि अमृत का प्रयोग कब कैसे और कितना करें :–

कृषि अमृत फसल बोते समय भी बीज के साथ सिड्रील के द्वारा भी खेत में डाला जा रहा है, इससे खाद सही जगह सही जगह मात्रा में गिरता है एवं खाद की लागत भी कम हो जाती है एवं दंगल खाद पहले एवं दूसरे पानी में भी डाला जाता है लहसुन, प्याज मं चौपाई से लेकर 2 माह बाद तक डाला जाता है एवं मिर्च, कपास, टमाटर, केला, पपीता एवं सभी तरह के फल सब्जी में पौधे लगाने के समय और पौधे लगने के 2 माह तक डाला जा सकता है।
उपयोग - कपास, मिर्च, टमाटर, लहसुन,प्याज आदि सब्जी में 2-2.50 बेग प्रति एकड़ एवं गेहूँ , चना, गन्ना, सोयाबीन, मक्का में 1.5-2 प्रति एकड़ केला, पपीता, संतरा आदि में 1-2 किलो प्रति गोड़ में डाला जा सकता है।

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

काश्तकार एग्रो जाईम

(ग्रेनुअल)

काश्तकार एग्रो जाईम प्रीमियम झाइम (दानेदार) खाद है जो जबरदस्त विशेषताओं से भरपूर है, (ऑक्सीजन, जिब्रेलिक, साइटोकायनिन्स) हाइड्रोलाईज्ड प्रोटीन्स, ऑर्गेनिक नत्रजन, अमीनो एसिड्स, हाईड्रोलाज्ड, कार्बोहाईड्रेटस व आवश्यक पौषक तत्व जैसे कि नत्रजन, फास्फोरस, पोटेशियम कैल्शियम, मैग्नीशियम, जस्ता, लोहा, ताम्बा, व मैग्नीज आदि को उपलब्ध कराने में सहायक है। यह नवीन जैव तकनीक पर आधारित जैव उत्पाद है। अनेक प्राकृतिक एजेंस भी काश्तकार एग्रो जाईम का हिस्सा है इनका मुख्य काम मेटल आयरन्स व अन्य पोषक तत्वों को संग्रहित करना है, यह पानी को भी संचित रखता है। इसकी एक खास बात है कि इससे पोधों को पोषक तत्व, सही मात्रा में, सही तरीके से, लम्बे समय तक व निरंतर मिलते रहते हैं, असरो पौधों का सम्पूर्ण समुचित और सुव्यवस्थित विकास होता है।

काश्तकार एग्रो जाईम के फायदे : गुणवत्ता, खाद, फसल की पैदावार में वृद्धि मिटटी की उर्वरक शक्ति को बढ़ाना। फूलों व फलों को गिराने से रोकना। फसलों में बीमारियों सेबचाव तथा निरोधक क्षतमा बढ़ाना । उर्वरकों का शीघ्र फसलों को उपलब्ध कराना ।

फसल सिफारिश : सोयाबीन, कपास गेहूँ, मक्का, गन्ना, अफीम, सरसों, सूरजमुखी, धान, आलू, प्याज, लहसन, मिर्च, और अन्य सब्जीयों के व गार्डन के लिये उपयुक्त।

उपयोग की मात्रा : 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ के मान से जमीन में भुरकाव करें एवं फसल लगाने के उपरान्त भी कर सकते है।

बंजर भूमि करे पुकार
जैविक खेती अबकी बार

विजय ग्रोमिंग

माईक्रोन्यूट्रिएंट्स

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

ग्रोमिंग जमीन में सुक्ष्म पौषक तत्व एक्टिव करने का काम करता है एवं जड़ों को बढ़ाने का काम करता है।

ग्रोमिंग एक बेजोड़ उत्पाद है। यह समुद्री प्रक्रिया द्वारा, वैज्ञानिक तरीकों से तैयार किया गया एक तरल पदार्थ है। जो सभी फसलों, बागो व सब्जियों आदि में पौधों को जरूरी मुख्य पोषक तत्वों को ग्रहण करने शक्ति में वृद्धि करता है। यह एक शक्तिवर्धक जैव उत्पाद है व बायों-स्टिम्यूलैंट के रूप में काम करते हुए पौधों की एंजाईम प्रक्रिया में वृद्धि करता है। यह फल एवं फूल लगने के लिए आवश्यक हार्मोन्स को प्रेरित करता है। इससे अधिक मुनाफा मिलता है। यह फसलों पर विभिन्न रोगो/बिमारियों व कीट व्याधियों के लिए किए वाले रसायनों के छिडकाव के प्रभाव को भी बढ़ाता है।

ग्रोमिंग के लाभ :

- यह पौधे की आन्तरिक क्रियाओं में भाग लेकर पौधे के सम्पूर्ण विकास में सहायक होती है।
- यह पौधों में हार्मोन्स की बढ़ोतरी कर फूलों व फलों का झड़ना रोककर फूल व फलों में वृद्धि करता है।
- यह सभी पोषक तत्वों को ग्रहण करने में मदद करता है।
- यह प्रकाश सश्लेषण क्रिया को बढ़ाकर पीलापन कम करने में सहायक है।
- इसके प्रयोग से उत्पाद का आकार, रंग, स्वाद, चमक व भार में बढ़ोतरी होती है।

सिफारिश : सभी अनाज दाले, तिलहन, सब्जियाँ, बाग व फूल आदि सभी फसलों पर छिड़काव हेतु सिफारिश की जाती है।

मात्रा व प्रयोग विधि : 40 या 50 मि.ली. प्रति टंकी (15 लीटर) पानी में मिलाकर स्प्रे करें। अधिक लाभ के लिए फसल की क्रांतिक अवस्था (अ) पौधें की वनस्पतिक वृद्धि (ब) फूल से बनते समय बाली में दाना भरते समय छिडकाव अवश्य करें। इसका फसल पर लाभ लेने के लिए फसल को जमीन में लगाकर इसका प्रयोग करें।

सावधानी :

1. बोतल को छाया में रखें, धूप में न रखें।
2. इस्तेमाल से पहले बोतल को हिलायें ।
3. बच्चों की पहुँच से दूर रखें।
4. केवल कृषि प्रयोग हेतु।
5. अधिक लाभ के लिए सुबह व सायं को फसल पर छिड़काव करें ।

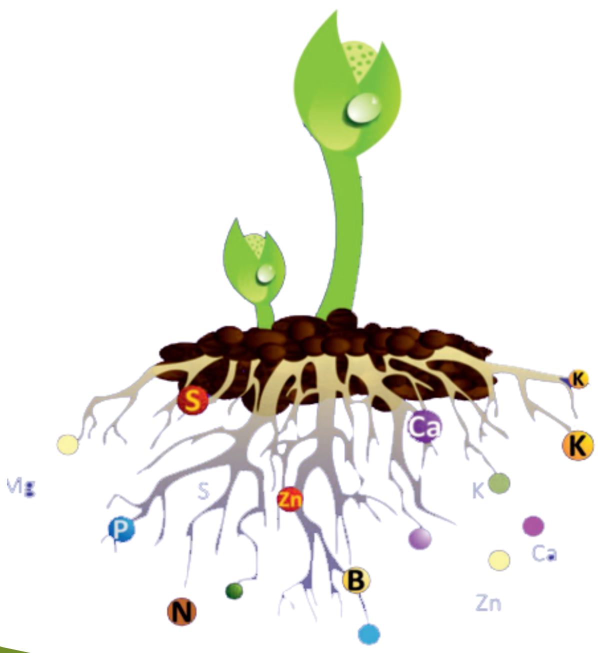

Contact :

Oraganic Macros+ Organic Matter : 15.3%

Nitrogen	:	3.5%
Potassium	:	1.93%
Phosphorus	:	1.5%

Organic Micros

Manesium	:	0.23%
Manganese	:	0.13%
Copper	:	0.24%
Iron	:	0.40%
Zinc	:	0.27%
Boron	:	720PPM

कास्तकार एग्रो रूट प्लस

प्राकृतिक उत्पाद

यह एक उच्च कोटि का प्राकृति जैविक उत्पाद ह्युमिक एसिड, अमीनो एसिड, फोल्वीक एसीड तथा अन्य एक्टिव बॉयो सूक्ष्म तत्व हैं जो कि पानी में 100% घुलनशील है। इसका प्रयोग छिड्काव में, ड्रीप (टपाक) में एवं बीज उपचार में भी होता है। यह किसी भी प्रकार के खाद माइक्रो न्यूट्रीएन्ट एवं कीटनाशक के साथ भी मिलाकर फसलों पर डाला जा सकता है।

प्रभाव : फसलों की अनुपातिक बढ़त तथा प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक। फसलों की गुणवत्ता तथा पैदावार को बढ़ाता है। स्वस्थ जमीन, स्वस्थ फसल, ज्यादा पैदावार, बेहतर जड़, बढ़्वार अधिक फुटाव, फसल उत्पादन का आकार, भार, रंग स्वाद में बढ़ोतरी करता है।

प्रयोग विधि : पानी में हिलाते हुए घोलें तथा इसके पश्चात फोलिएर स्प्रे तथा सिंचाई के लिये प्रयोग करें।

किसान एग्रो रूट प्लस : सभी प्रकार की फसलों में प्रयोग किया जा सकता है।

छिड़काव : 2 से 3 ग्राम किसान एग्रो रूट प्लस को प्रति लीटर पानी में मिलाकर पौधों पर छिड़काव करें।

मृदा उपचार : 500 ग्राम कृषिधन रूट ग्रो को 100 कि. ग्रा. पकी हुई गोबर की खाद में बुआई के पहले या खाड़ी फसल में प्रति एकड़ क्षेत्र में उपयोग कर तुरंत सिंचाई करें।

For all Crops,
Better Roots &
Yield Promoter

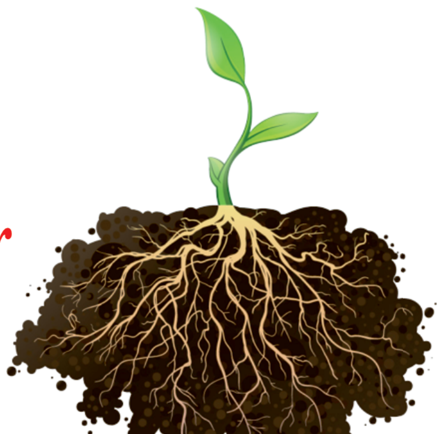

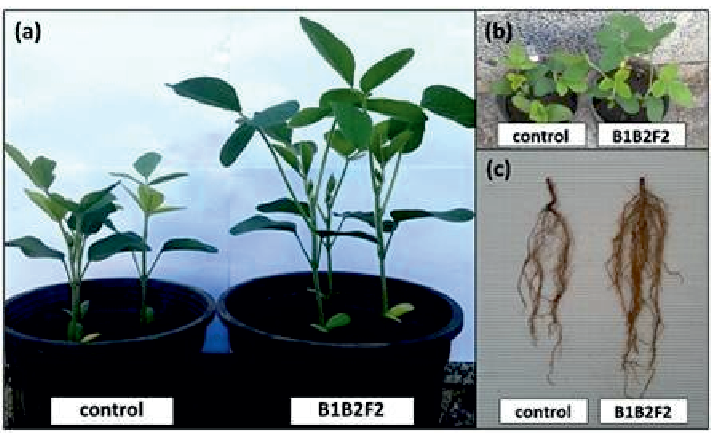

किंग प्लस
बायो पेस्टीसाईड

आज किसान अपनी फसल में लगने वाली बिमारियों, कीट-व्याधियों, इल्लियों आदि से रक्षा हेतु महंगी से महंगी दवाईयाँ व रसायनिक कीटनाशक के इस्तेमाल के लिए मजबूर है। रसायनों का अंधाधुध प्रयोग से सुन्डियों में रसायनों के प्रतिरोधी क्षमता विकसित हो जाने के कारण रसायनों का असर कम हो जाता है जिससे और अधिक रसायनों की मात्रा बढ़ाकर बार-बार छिड़काव करना पड़ता है जिससे किसान की फसल का लागत मूल्य बढ़ता चला आ रहा है।

किसान की फसल संबंधी उपरोक्त प्रकार की समस्याओ के हल के लिए कास्ताकार एग्रो ने हमेशा प्रयासरत् रहा है किसान की विभिन्न फसलो में लगने वाली इल्लियों (सुण्डियो) के नियंत्रण के लिये कंपनी ने एक अत्याधुनिक जैव उत्पाद किंग प्लस को किसानो के बीच में उतारा है जो कि किसानो का एक भरोसेमंद उत्पाद है ।

किंग प्लस में क्या है व कैसे कार्य करता है :-

यह एक अन्य प्रकार का हर्बल जैव उत्पाद है। इसमें विशेष प्रकार की वनस्पतिक जड़ी-बूटीयों का अर्क जिसके प्रभाव से इल्लियां (सून्डियों) के पाचन तंत्र को प्रभावित करता है जिससे इल्लियां अपना खाना लेना बंद कर देती है। साथ ही इल्लियों के अण्डे, प्यूपा व लार्वा अवस्था को खत्म कर इनकी वंश वृद्धि को रोकता है, बड़ी इल्लियां (सुन्डियाँ) के संपर्क मं आने पर संकृमित होकर मर जाती है साथ ही इसमें शक्तिशाली जन्तुरोधक का गुण होने के कारण यह पौधे पत्तों, टहनियों फूलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों से बचाता है । यह जैव उत्पाद होने के कारण ज्यादा तापमान पहुंचाने वाले कीटों से बचाता है। यह जैव उत्पाद होने के कारण ज्यादा तापमान में कम सहायक है, अधिक लाभ लेने के लिए सुबह या शाम को ही प्रयोग में लेवें। यह जैव उत्पाद होने के कारण रसायनिक उत्पाद की तरह फसल पर छिड़काव के बाद खुश्की (कालापन) नहीं आता है।

किंग प्लस के लाभ :-

यह एक जैविक उत्पाद होने के कारण प्रयोग से इल्लियों (सून्डियों) पर तुरंत नियंत्रण होता है व इसका असर लम्बे समय तक रहता है।
पौधे का सम्पूर्ण विकास होता है।
इससे पौधों मं दवा के प्रति प्रतिरोधी क्षमता विकसित नहीं होती है। छिड़काव पर किसान के स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्परिणाम को रोकता है इससे स्वस्थ व उच्च गुणवत्ता की फसल प्राप्त होती है।
यह हर्बल उत्पाद होने के कारण प्रयोग में सुरक्षित है व मानव, जानवरों, पशु-पक्षियों व पर्यावरण के लिए दुष्परिणाम रहित है ।
अधिक लाभ के लिए फसल की जमीन को पानी लगाने के बाद फसल के उपर छिड़काव करें।

मात्रा :

1. 20 से 25 मि.ली. प्रति लीटर पानी की टंकी में प्रयोग में लेवें ।
2. अच्छे परिणाम के लिए 12 से 15 दिन के बाद दोबारा छिड़काव करवायें ।

किंग प्लस के प्रयोग की सिफारिश :

फसल पर इल्लियों (सुन्डियों) का लक्षण (अण्डे आदि) दिखाई देते ही स्प्रें करें। कीटों के हमले की संभावना हो तो छिड़काव पहले ही किया जा सकता है ताकि हमले से होने वाले नुकसान से बचा जा सकें। सभी फसलों अनाज, दलहन, तिलहन, सब्जियां फूलों व आदि जिन पर इल्लियों (सून्डियों) का प्रकोप होता है छिडकाव की सिफारिश की जाती है । सभी फसलों पर किंग के.बी.सी. का छिड़काव करने पर अच्छे परिणाम मिलते हैं।

किंग प्लस के प्रयोग में सावधानियाँ :

1. हवादार व ठण्डें स्थान पर ही रखें। 2. इस्तेमाल से पहले बोतल को अच्छी तरह से हिलाऐं । 3. बच्चों की पहुंच से दूर रखें ।
4. इस्तेमाल से पहले बोतल पर लगे रैपर व निर्देश पत्रिका को ध्यान से पढ़ें । 5. अधिक लाभ के लिए सुबह या शाम को छिड़काव करें।

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

कास्तकार सुप्रीमो

सभी फसलों को बढ़वार के लिए एवं अच्छी उपज के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। यह पोषक तत्व पौधे को भूमि (मिट्टी) से प्राप्त करते हैं. लगातार फसल उत्पादन करने से इन पोषकतत्वों की मिट्टी में कमी हो जाती है जिनकी पूर्ति के लिए किसान खाद का ही प्रयोग करते हैं। प्रत्येक खाद में कुछ पोषक तत्व अधिक मात्रा में होते है परंतु किसी भी खाद में सभी पोषक तत्व उपलब्ध नहीं होते है। जिंक जिसे आम भाषा जस्ता कहते हैं, यह भी फसलों के लिए आवश्यक होता है। यह सूक्ष्म पोषक तत्व की श्रेणी में आता है। दलहनी फसलों में जिंक की कमी के कारण प्रोटीन संचय की दर कम हो जाती है। पौधों के लिए जिंक मृदा से अवशोषण द्वारा प्रमुख रूप से प्राप्त होता है। पौधों के माध्यम से खाद्य पदार्थों में जिंक का संचय होता है और जीवित प्राणियों की जिंक प्राप्त होता है। दुनिया की आबादी का एक तिहाई भाग जिंक कुपोषण के जोखिम के अंतर्गत आता है। विशेष रूप से बच्चों में जिंक तत्व की कमी से कुपोषण बढ़ता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण जिंक तत्व की कमी वाले आहार का सेवन करना है। सुप्रीमो जिंक से पौधों में होने वाले रोग में कमी आती है।

: जिंक सुप्रीमों ही क्यो

जिंक पौधों की वृद्धि में महत्व इसकी पौधों के प्रजनन क्रियाओं के लिए आवश्यक हार्मोन के संश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका पौधा में वृद्धि को निर्धारित करने वाले इडोल एसिटिक अम्ल नामक हार्मोन के निर्माण में जिंक की अहम भूमिका पौधा में विभिन्न धात्विक एंजाइमों जैसे कार्बोनिक एनहाइड्रेज, डिहाइड्रोजीनेस प्रोटीनेस एवं पेप्टिनेस के उत्पादन में मुख्य भूमिका जिंक का पौधों में प्रोटीन संश्लेषण तथा जल अवशोषण में अप्रत्यक्ष रूप में भाग लेना पौधों के आनुवांशिक पदार्थ राइबोन्यूक्लिक अमल के निर्माण में भी इसकी भागीदारी

पौधो मे जिंक की कमी के लक्षण

पौधों की माध्यम पत्तियों पर आते है। जिंक की अधिक कमी से नई पत्तियां उजली निकलती हैं। पतियों की शिराओं के मध्य सफेद धब्बे में दिखाई देते हैं। मक्का में जिंक की कमी से सफेद कली रोग उत्पन्न होता है। अन्य फसलों जैसे नीबू की वामन पत्ती, आडू का रोजेट और धान में खैरा रोग उत्पन्न होता है, जस्ता की कमी से तने की लम्बाई में कमी (गाँठों के मध्य भाग का छोटा होना) आ जाती है। बालियाँ देर से निकलती है और फसल पकने में विलम्ब होता है। तने की लम्बाई घट जाती है और पत्तियाँ मुड़ जाती है। मृदा में जिंक उलब्धता को प्रभावित करने वाले कारक मृदा पीएच मान जैसे-जैसे बढ़ता है वैसे-वैसे पौधों के लिए जिंक की उपलब्धता में कमी आने लगती है, पौधों में फास्फरस युक्त उर्वरक अधिक हो जाता है। मृदा में तापमान में कमी होने पर जिंक उपलब्धता घटती है, मृदा का तापमान बढ़ने पर जिंक की उपलब्धता बढ़ती है, इसलिए ठंड क्षेत्रों में मृदा का तापमान नियंत्रित करने के लिए मल्च का उपयोग जरुरी फसलों की प्रजातियाँ और फिल्म भी जिंक तत्व की आवश्यकता एवं उपयोग करने में महत्वपूर्ण होती है। हर फसल में जिंकतत्व की आवश्यकता और उपयोग महत्वपूर्ण है।

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

फंगी किलर

बायो फंगीसॉईट (तरल)

रासायनिक दवाओं से करे इंकार मृदा व फसलो की फंगी किलर से करें उपचार

यह एक 100 % रिसर्च आधारित बायो आर्गेनिक फफूंदनाशक है जो विभिन्न प्रकार के वनस्पतिक तत्वों और विभिन्न प्रकार के एंटी रिप्लॅट एजेंट से मिलकर बना है। फंगी फाईटर विभिन्न प्रकार की फफूंदों से फसलों की सुरक्षा करता है एवं फसल पर इनके दौबारा आने से रोकता है। विभिन्न प्रकार की फफूंद जैसे लीफ ब्लाईट, पॉवडरी मिल्ड्यू ब्लाईट्स आदि से फसल की सुरक्षा करता है व जड़ गलान व तना सहन से भी सुरक्षा करता है। कास्तकार फंगी किलर के उपयोग से किसी भी फसल, जानवर एवं मानव जीवन पर कोई विषैला प्रभार नहीं होता है।

फसल सिफारिश : समस्त प्रकार की फसलों जैसे गेहूँ, चना, सोयाबीन, मक्का, कपास, मूंग, मटर, धान, गन्ना, आलू, लहसून एवं प्याज सभी प्रकार की सब्जियां एवं फलों के वृक्षों पर रोगरहित, उच्च गुणवत्ता एवं अधिकतम पैदावार के लिए कास्तकार फंगी फाईटर का उपयोग करते है।

उपयोग की विधि : रू 200 मिली लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से बीजोपचार के समय, बुवाई के 20 से 25 दिन के अंतराल के बाद एवं फफूंद रोग होने पर उपयोग करें । मात्रा : 15 लीटर पानी में सिर्फ 20-25 मिली ली. फंगी किलर मिलाकर फसलो पर छिड़काव करें ।

कास्तकार सल्फर सोल्यूशन

सूक्ष्म भिगाने योग्य फफूँदनाशक

दलहनी फसले भारतीय आहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका उत्पादन लगभग 24 मिलियन टन हो रहा है। तिलहन फसल के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग आवश्यक है जिसमें नाईट्रोजन फास्फोरस पोटाश, गंधक, जिंक व बोरान तत्व अति आवश्यक है।

गत वर्षों में सन्तुलित उर्वरकों के अन्तर्गत केवल नाईट्रोजन फास्फोरस एवं पोटास के उपयोग पर बल दिया गया। सल्फर के उपयोग पर विशेष ध्यान न दिये जाने के कारण मृदा के नमूनों में 40 प्रतिशत सल्फर की कमी पाई गई। आज उपयोग में आ रहे गंधक रहित उर्वरको जैसे यूरिया डी.ए.पी. तथा म्यूरेट आफ पोटाश के उपयोग से गंधक की कमी निरन्तर बढ़ रही है। गंधक की कमी मुख्यत: निम्न कारणों से भूमि के अन्दर हो जाती है जिसकी तरफ कृषकों का ध्यान नहीं जाता। भूमि में सन्तुलित उर्वरक का प्रयोग न करना। लगातार विभिन्न फसलों द्वारा गंधक जमीन में लेते रहने व सल्फर रहित उर्वरकों के प्रयोग में इन तत्वों की कमी हो जाती है। ऐसे उर्वरकों का उपयोग जिसमें बहुत कम यान के बराबर सल्फर का होना जहाँ अकार्बनिक खाद प्रयोग मैं नहीं आती है वहाँ पर भी सल्फर की कमी का होना।

गंधक की कमी के लक्षण

पौधों की पूर्ण रूप से सामान्य बढोत्तरी नहीं हो पाती तथा जड़ों का विकास भी कम होता है। पौधों की उपरी पत्तियों नयी पत्तियों का रंग हल्का फीका व आकार में छोटा हो जाता है पत्तियों की धारियों का रंग तो हरा रहता है परन्तु बीच का भाग पीला हो जाता है। पत्तियों कप के आकार की हो जाती है तथा पत्तियों की निचली सतह एवं तने लाल हो जाते हैं। पत्तियों के पीलापन की वजह से भोजन पूरा नहीं बन पाता और उत्पादन में कमी आने से तेल का प्रतिशत कम हो जाता है। जहाँ की वृद्धि कम हो जाती है। तने कड़े हो जाते है तथा कभी-कभी ये ज्यादा लम्बे व पतले हो जाते है। फसल की गुणवत्ता में भी कमी आ जाती है।

गंधक के लाम :

1- मंचक क्लोरोफिल का अवयव नहीं है फिर भी यह इसके निर्माण में सहायता करता है तथा पौधे के हरे भाग की अच्छी वृद्धि करता है।

2- यह गंधकयुक्त एमिनो अम्ली सिस्टाइन, सिस्टीन तथा मिथियोनीन तथा प्रोटीन संश्लेषण में आवश्यक होता है।

3- सरसों के तेल में गंधक के यौगिक पाये जाते है। तिलहनी फसलों में तैलीय पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करती है।

4- इसके प्रयोग से बीज बनने की क्रियायों में तेजी आती है।

5- यह सरसां प्याज एवं लहसुन की फसल के लिये आवश्यक है। यह सोयाबीन में मकड़ी पर भी बहुत उपयोगी है।

उपयोग संपूर्ण फसलों में इसका उपयोग किया जा सकता है। दलहनी फसलों के लिए अधिक उपयोगी होता है।

मात्रा 2-3 मि.ली. प्रतिलीटर पानी

सावधानियों दवा को न सूध और स्पर्श से बचे दुषित त्वचा और कपड़ों को धो डालें उपयोग के दौरान खाना-पीना तथा धुम्रपान करना मना है।

कास्तकार भूमि शक्ति

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

भूमि शक्ति के लाभ

1. यह मिट्टी बीज जनित बीमारियों व फसलों की अन्य बीमारियों कीट व्याधियों को कम करने में सहायक है।
2. यह रसायनों के दुष्परिणाम मात्रा को कम करने में सहायक है।
3. यह कारियल के कुप्रभाव को कम करने में मदद करता है।
4. यह फसलों को लम्बे समय तक पोषक तत्व उपलब्ध कराने में सहायक है
5. यह उत्पादको आकार, नार, चमक स्वाद को बढ़ाता है।
6. यह फसलों को उनकी सही समय अवधि में एक साथ पकाने में मदद करता है।
7. भूमिलाई मृदा में जीवाणुओं की संख्या वृद्धि करता है और भूमि में पैदा होने वाले हानिकारक पद व विषाणुओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है या होने से मृदा में जीवांश की मात्रा जल संग्रहण कमता बढ़ता है।

भूमि शक्ति की विशेषताएँ

सभी मुख्य पोषक तत्व जैसे नाईट्रोजन, फास्फोरस, पोटास के साथ-साथ द्वितीयक सूक्ष्म पोषक तत्व जैविक रूप में उपलब्ध है।
यह फल की मात्रा को बढ़ाकर स्वस्थ एवं तीव्र वृद्धि में सहायक है।
यह जड़वतने में अत्यधिक बढ़ोतरी करता है।
भूमि में जीवाणुओं का विकास कर पौधों में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
यह चूर्ण रूप में होने के कारण इसका उपयोग आसानी से हो जाता है।
इसे पौधे आसानी से ग्रहण कर लेते है।
सिफारिश की गई फसल गेहूं, धान, नरमा कपास, गन्ना, आलू, प्याज, लहसून, मूंगफली, सरसों, सोयाबीन, अगाडी, चना, स्वार, मिर्च, टमाटर, कि, अभार, अमरूद, केला आदि फलों व सब्जियों के लिए।
40 किलो ग्राम प्रति पौधा

सावधानियां : 1. इसको छाया व नमी रहित जगह पर रखें। 2. बच्चों की पहुंच व आहार पदार्थों से दूर रखे रासायनिक खाद व कीटनाशक दवाओं के साथ मिलाकर इस्तेमाल न करें 3. यह रसायन रहित होने के कारण फसलों व मृदा को किसी भी तरह का नुकसान नहीं होता है 4. बेहतर लाभ के लिए गोबर की गीली खाद के साथ इस्तेमाल करें।

संरचना	Moisture	15% 25%
पी.एस.बी.	Bulk Density	0.7,0.9 gms(cm3)
माईक्रोराईजा	Total Organic Carbon	15% Min
राईझोबियम	PH	7.0% Min
अजोस्पिरीलम	Total Nitrogen (as N)	1.0% Min
एजीटोबैक्टर	Total Phosphate (as P2O3)	0.5% Min
प्राकृतिक फफूँद नाशक	Total Potassium (as K20)	0.5% Min
इर्मा कम्पोष्ट, जीवांश खाद	Chadmium (as Cd)	3.0 mg/kg.mas
आर्गेनिक मेन्योर	Chromium (as Cr)	50 mg./kg.max
	Nickel (as Ni)	50 mg./kg.max
	Lead (as Pb)	100 mg./kg.max

भूमि शक्ति अपनाओं मिट्टी मे जान वापस लाओं

कास्तकार मिल्क मैजिक

कास्तकार मिल्क मैजिक ही क्यों ?

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ पर 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि आधारित व्यवसाय पर निर्भर है। इसलिए यहाँ अभी तक दो क्रांति हुई है। पहली हरित क्रांति जिसमें उन्नत बीज व उन्नत खाद उत्पादन बढ़ाया गया है। दूसरी श्वेत क्रांति जिसमें पशुओं की उन्नत नस्लों व उनके भोजन को बेहतर कर उनसे उत्पादन बढ़ाकर लोगों को इस में आत्मनिर्भर बनाया गया है। परन्तु आज के आधुनिक युग मे पशुओं के खानपान में रसायनों के इत्याधिक प्रयोग व चारागारों की कमी से पशुओं के लिए आवश्यक पोषक तत्वों में कमी आई है। जिसके कारण पशुओं में दुध उत्पादन क्षमता में कमी, पौष्टिकता में कमी और बीमारियों को बढ़ावा मिला है जैसे बांझपन, प्रजनन क्षमता में कमी, पाचन तंत्र का खराब होना, स्तनों में पकाव आदि शरीर में जमा कैल्शियम का 98 प्रतिशत हड्डियों एवं 2 प्रतिशत तरल द्रव्यों में मौजूद रहता है जो कि नाड़ी तंत्र हड्डियों का ढांचा, ह्रदय गति, खुन का जमना, पाचन क्रिया तथा दुधारु जानवरों के दुध में मुख्य कार्य निर्माता है। शरीर में केल्शियम के सही उपयोग के लिए फास्फोरस तथा विटामिन डी 3 सही मात्रा में 2.1 आवश्यक है। शरीर में कैल्सियम की कमी के कारण दुधारु जानवरों में बुखार तथा चारा कम खाना शारीरिक कमजोरी तथा दूध की मात्रा में कमी आ जाती है। शरीर में कैल्शियम की कमी अधिक हो जाने से जानवर स्थाई रूप से कमजोर तथा नकारा हो जाता है।

इन सबको ध्यान में रखकर कास्तकार मिल्क मैजिक ने सम्पूर्ण विटामिन, चिलेटेड मिनरल और कम्पलीट सप्लीमेंट को मिल्क मैजिक के नाम से पशु पालको के लिए बाजार में उतारा है, जो कि अधिक दूध उत्पादन में वरदान साबित हुआ है। यह अपने आप में संपूर्ण पोषक आहार है।

मिल्क मैजिक के लाभ

1. इससे दुध उत्पादन में शीघ्र वृध्दि होती है व दूध में फेट की मात्रा बढ़ती है।
2. इसमें कैल्शियम अधिक मात्रा में होने के कारण हड्डियां मजबूत होती है
3. पशु की रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर उसे स्वस्थ रखता है।
4. यह भूख बढ़ाने में सहायक होता है
5. यह पशुओं की प्रजनन क्षमता को भी बढाता है
6. पशु लम्बे समय तक दूध देता है।
7. गर्भावस्था व दुग्धावस्त में कैल्शियम की बढ़ी जरूरत को पूरा करने में सहायक है।
8. स्वास्थ्य एवं दुध उत्पादकता के लिए कैल्शियम तथा फास्फोरस की पूर्ति करने में सहायक है।
9.शरीर में कैल्शियम के बेहतर अवशोषण वाला अनूठा फार्मूला अधिकतम दूध उत्पादन में सहायक है।

MILK MAGIC

Direction for use :

Cow and Buffalo	100 ml daily
Sheep and Goats	10 to 20 ml daily
Calves	40ml daily
Poultry Chicks	20 ml/100 Bird
Broiler	50 ml/100 Bird
Layers	100 ml/100 Bird

Nutritional Value each 100ml.	
Calcium	7200 mg
Phosphorous	3600 mg
Vitamin-D3	35230 IU
Vitamin-B12	200 mcg
Jiwanti	10 mg
Shatavari	10 mg
Vitamin-E	100 mg
Vitamin-A	5 mg
Lypase Enzyme	50 mg
Cobalt Chloride	70 mg
Zinc Sulphate	40000 mg
Carbobydrate	

KASHTKAAR AGRO BIOCARE PVT. LTD.

कास्तकार मिल्क मैजिक

प्रोटिन युक्त पशु आहार

हमारे संस्थान कास्तकार बॉयो केयर द्वारा वैज्ञानिक ढंग से बनाये जाने वाले पशु आहार पूरी तरह से संतुलित है । जो कि उच्चकोटि के अनाज, खल्ली, चापड़ चावल की पॉलिश, विभिन्न चूरी, गुड़ की राब, नमक, आदि के मिश्रण से बनाये जाते है । अतिरिक्त दूध एवं शक्ति के लिए लोहा, तांबा, कोबाल्ट, जस्ता, केल्सियम फास्फोरस एवं विटामिन का मिश्रण भी आवश्यक मात्रा मे किया जाता है । सभी कच्चे माल कर उपयोग, हमारी लेब्रोरेटरी में परिक्षण की लेने के पश्चात ही होता है इसलिए यह किसान पशु आहार खिलाने से न सिर्फ पशुओ की दुग्ध उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता बढ़ती है बल्कि पशुधन हमेशा तंदरूस्त व निरोगी बना रहता है । पशु आहार मे सभी निम्न आवश्यक जीवन तत्व, खनिज तथा अन्य पौष्टिक तत्व अनुपात होता है ।

CRUDE PROTEIN	CRUDE FAT	CALCIUM	PHOSPHORUS
VITAMIN AD3	MOISTURE	TRACE MINERALS	SAND SILICA

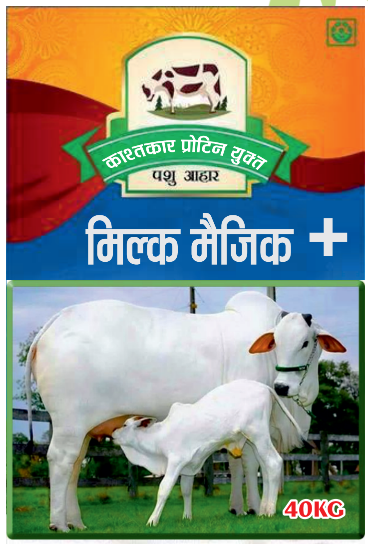

प्रयोग विधि :

पशु को खिलाने से आधा या एक घंटा पूर्व ही पानी में भिगोये । इसके बाद सूखे भूसे या चारे में मिलाकर खिलायें । सूखा पशु आहार भी खिलाया जा सकता है । छोटे पशुओ को आधा किलोग्राम से 2 किलोग्राम प्रतिदिन आयु एवं वजन के अनुसार खिलायें । हरे और सूखे चारे को पचाने कि अधिकतम क्षमता इस फीड में है ।

आहार की मात्रा :

पशु	दैनिक आहार
गाय	300 ग्राम/लीटर
भैंस	400 ग्राम/लीटर